

21-नवयुग का मत्स्यावतार

अध्याय 1: तुच्छ को महान बनाने वाली दिव्य सत्ता

इस अध्याय में ब्रह्मा जी और एक छोटे से कीड़े (जो बाद में महामत्स्य बना) की कहानी के माध्यम से दिव्य सत्ता की शक्ति का वर्णन किया गया है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ब्रह्मा जी सुबह-सुबह क्या कर रहे थे? उत्तर: ब्रह्मा जी प्रातःकाल संध्या-वन्दन कर रहे थे।
2. प्रश्न: ब्रह्मा जी को चुल्लू के पानी में क्या मिला? उत्तर: ब्रह्मा जी को चुल्लू के पानी में एक छोटा सा कीड़ा मिला।
3. प्रश्न: ब्रह्मा जी ने कीड़े के साथ क्या किया? उत्तर: ब्रह्मा जी ने उदारतावश उस कीड़े को जल से भरे कमण्डल में छोड़ दिया।
4. प्रश्न: कमण्डल में छोड़ने के बाद कीड़े का क्या हुआ? उत्तर: थोड़े ही समय में वह कीड़ा बढ़कर इतना बड़ा हो गया कि उसने पूरे कमण्डल को भर दिया।
5. प्रश्न: कमण्डल के बाद ब्रह्मा जी ने उसे कहाँ छोड़ा और वहाँ क्या हुआ? उत्तर: उन्होंने उसे पास के तालाब में छोड़ा, लेकिन वह कीड़ा बढ़कर उस तालाब में भी पूरी तरह फैल गया।
6. प्रश्न: अंत में ब्रह्मा जी ने उस विशालकाय जीव को कहाँ पहुँचाया? उत्तर: अंत में ब्रह्मा जी ने उसे समुद्र में पहुँचा दिया, जहाँ उसने संसार के पूरे जल-थल क्षेत्र को घेर लिया।
7. प्रश्न: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को अपना असली परिचय क्या दिया? उत्तर: महामत्स्य ने कहा कि वह केवल एक जीवधारी दिखता है, पर वास्तव में वह परब्रह्म है।
8. प्रश्न: परब्रह्म अवतार क्यों लेते हैं? उत्तर: परब्रह्म इस अनगढ़ संसार को सुव्यवस्थित करने के लिए अवतार लेते हैं।
9. प्रश्न: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को क्या जिम्मेदारी सौंपी? उत्तर: महामत्स्य ने सृष्टि को नई साज-सज्जा के साथ सुन्दर और समुन्नत बनाने की जिम्मेदारी ब्रह्मा जी को सौंपी।
10. प्रश्न: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को क्या वचन दिया? उत्तर: उन्होंने वचन दिया कि जब भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदलने की आवश्यकता पड़ेगी, वे अदृश्य रूप में सहायता करने आते रहेंगे।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी से क्यों कहा कि "श्रेय तुम्हें मिलेगा, पर प्रेरणा योजना क्षमता मेरी ही कार्य करेगी"? उत्तर: महामत्स्य ने यह इसलिए कहा क्योंकि जीवधारी अपनी सीमित क्षमता से केवल छोटे कार्य ही कर सकते हैं। असाधारण और महान कार्यों को सम्पन्न करने के लिए दैवी (ब्राह्मी) शक्ति की आवश्यकता होती

है, जो अदृश्य रूप से कार्य करती है।

2. प्रश्न: इस अध्याय के अनुसार असम्भव कार्य भी कैसे सम्भव हो जाते हैं? उत्तर: असम्भव कार्य तब सम्भव हो जाते हैं जब कोई महान प्रयोजन दैवी प्रेरणा से सम्पन्न किया जाए और कार्य करने वाला व्यक्ति अपनी प्रामाणिकता और प्रतिभा को बनाए रखे।

3. प्रश्न: वेद-ज्ञान का अवतरण क्यों और कैसे हुआ? उत्तर: सृष्टि की संरचना के बाद, मनुष्य स्तर के प्राणियों को दिव्य चेतना, विवेक और प्रज्ञा से सुसज्जित करने के लिए वेद-ज्ञान का अवतरण दिव्य लोक से हुआ। इसे ब्रह्मा जी की लेखनी ने लेखबद्ध किया, जिसे देवमानवों ने अपनाकर धरती पर स्वर्ग जैसा वातावरण बनाया।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: छोटे से कीड़े का विराट महामत्स्य में बदलना किस गहरे रहस्य को उजागर करता है? उत्तर: यह घटना इस रहस्य को उजागर करती है कि तुच्छ दिखने वाली शुरुआत के पीछे यदि कोई महान दैवी संकल्प हो, तो उसका विस्तार असीमित हो सकता है। यह बताता है कि असाधारण विस्तार और प्रगति जीव की अपनी क्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि उस पर अवतरित हुई दिव्य सत्ता के प्रवाह का चमत्कार है।

2. प्रश्न: "जीवधारी अपनी क्षमता के अनुरूप थोड़ा ही कुछ कर सकते हैं"। इस कथन का सृष्टि निर्माण और युग परिवर्तन जैसे महान कार्यों के संदर्भ में क्या महत्व है? उत्तर: इस कथन का गहरा महत्व है। यह स्पष्ट करता है कि सृष्टि निर्माण या युग परिवर्तन जैसे विशाल कार्य किसी एक व्यक्ति या समूह की मानवीय शक्ति से परे हैं। इन कार्यों की सफलता के लिए एक अदृश्य दैवी चेतना का मार्गदर्शन, प्रेरणा और क्षमता आवश्यक है। मानवीय पुरुषार्थ केवल एक माध्यम बनता है, जबकि वास्तविक संचालक शक्ति अदृश्य सत्ता ही होती है।

अध्याय 2: तीव्र विस्तार चेतना का स्वभाव

इस अध्याय में बताया गया है कि दैवी चेतना का स्वभाव ही तीव्र गति से विस्तार करना है, जैसे एक बीज से जंगल बन जाता है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विकासवाद के अनुसार सृष्टि का आरम्भ किस जीव से हुआ? उत्तर: विकासवाद के अनुसार, सृष्टि का आरम्भ "अमीबा" जैसे एककोशीय जीव से हुआ।

2. प्रश्न: एक छोटे से अमीबा से असंख्य भिन्न-भिन्न जीवधारी कैसे बन गए? उत्तर: यह चमत्कार अमीबा का नहीं, बल्कि उस पर उतरी दिव्य सत्ता के प्रवाह का था, जिसने असम्भव को सम्भव बना दिया।

3. प्रश्न: एक बीज से पूरा जंगल कैसे बन सकता है? उत्तर: एक बीज से उत्पन्न पेड़ हजारों बीज पैदा करता है। यदि इन बीजों को बोया जाए, तो उनसे अनगिनत पेड़ उग सकते हैं, और यह क्रम कुछ पीढ़ियों तक चले तो

एक विशाल जंगल बन सकता है।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार मनुष्य अपने बलबूते पर क्या नहीं कर सकता? उत्तर: मनुष्य अपने बलबूते पर बादलों को बरसाना, वसंत में फूल खिलाना या ऋतुओं का क्रमबद्ध परिवर्तन नहीं कर सकता।

5. प्रश्न: दिव्य सत्ता का मूल संकल्प क्या है? उत्तर: दिव्य सत्ता का मूल संकल्प "एकोऽहम् बहुस्याम" (मैं एक हूँ, बहुत हो जाऊँ) है, जिससे वह पूरी प्रकृति को सुसज्जित और गतिशील बनाती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "लघु से महान्" होने की प्रक्रिया में दैवी सत्ता की इच्छा और योजना का क्या महत्व है? उत्तर: "लघु से महान्" होने की प्रक्रिया में दैवी सत्ता की इच्छा और योजना का केंद्रीय महत्व है। जब किसी प्रयोजन के पीछे दैवी इच्छा होती है, तो उसका विस्तार बहुत तेजी से होता है और उसमें कोई शंका नहीं रह जाती।

2. प्रश्न: युग परिवर्तन के कार्य को एक दिवास्वप्न क्यों कहा जा सकता है? उत्तर: युग परिवर्तन के कार्य में समाज में छाए अनौचित्य का परिशोधन और देव-संस्कृति के अनुरूप नई संरचना करना शामिल है। यह कार्य इतना विशाल है कि किसी व्यक्ति या छोटे संगठन द्वारा इसे करने का प्रयास एक दिवास्वप्न या किसी की सनक जैसा लगता है, क्योंकि यह मानवीय क्षमता से बहुत बड़ा प्रतीत होता है।

3. प्रश्न: लेखक ने दैवी शक्ति की सक्षमता को सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिया है? उत्तर: लेखक ने तर्क दिया है कि जिस सत्ता ने आकाश में सूर्य, चंद्र, तारे टाँग दिए और निर्जीव धरातल को अग्नि, जल, पवन से भर दिया, उसके लिए युग परिवर्तन जैसी बड़ी योजना को सम्भव बनाना कठिन नहीं है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "एकोऽहम् बहुस्याम" का सिद्धांत चेतना के विस्तार और युग परिवर्तन के कार्य से कैसे संबंधित है? उत्तर: "एकोऽहम् बहुस्याम" का अर्थ है 'एक से अनेक होना'। यह सिद्धांत चेतना के विस्तार का मूल स्वभाव है। युग परिवर्तन के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि एक दिव्य विचार या संकल्प (जैसे 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका) जब दैवी चेतना से जुड़ता है, तो वह असंख्य लोगों तक फैलकर एक विशाल आंदोलन का रूप ले लेता है और समाज में व्यापक बदलाव लाने में सक्षम होता है।

2. प्रश्न: अध्याय में बीज और अमीबा के उदाहरणों का उपयोग किस मुख्य विचार को स्थापित करने के लिए किया गया है? उत्तर: इन उदाहरणों का उपयोग यह स्थापित करने के लिए किया गया है कि किसी भी महान् कार्य या क्रांति की शुरुआत बहुत छोटी हो सकती है, लेकिन यदि उसके पीछे दैवी प्रेरणा और संकल्प शक्ति हो, तो उसका विस्तार अकल्पनीय और तीव्र गति से होता है। यह मानवीय पुरुषार्थ की सीमाओं और दैवी हस्तक्षेप की असीम संभावनाओं के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है।

अध्याय 3: उसी धारा में प्रस्तुत एक उदाहरण

इस अध्याय में युग परिवर्तन के ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरण दिए गए हैं, जैसे- राम-राज्य की स्थापना, महाभारत, बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन और गांधीजी का स्वतंत्रता आंदोलन, यह सिद्ध करने के लिए कि महान परिवर्तन दैवी सहायता से ही संभव होते हैं।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: कच्छपावतार ने अपनी पीठ पर क्या लादा था? उत्तर: कच्छपावतार ने अपनी पीठ पर समुद्र-मन्थन की भारी-भरकम योजना लादी थी।
2. प्रश्न: परशुराम ने संसार भर में क्या कार्य किया था? उत्तर: परशुराम ने संसार भर का "ब्रेन वाशिंग" किया था, अर्थात् मस्तिष्क पर छाई अवांछनीयताओं को समाप्त कर विचार-क्रांति की थी।
3. प्रश्न: राम-राज्य की स्थापना का कार्य किसने सम्पन्न किया था? उत्तर: असुरों का केंद्र बनी लंका का पराभव और राम-राज्य की स्थापना का नियोजन दो राजकुमारों (राम-लक्ष्मण) और मुट्ठी भर रीछ-वानरों ने सम्पन्न किया था, जिसके पीछे दैवी शक्ति थी।
4. प्रश्न: पाँच पाण्डवों ने किसकी सेना को परास्त किया था? उत्तर: पाँच पाण्डवों ने कौरवों की विशाल अक्षौहिणी सेना को परास्त किया था।
5. प्रश्न: बुद्ध ने किस चीज का प्रवर्तन किया था? उत्तर: बुद्ध जैसे गृहत्यागी, तपस्वी ने विश्वव्यापी धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।
6. प्रश्न: ब्रिटिश साम्राज्य को भारत छोड़ने के लिए किसने विवश किया? उत्तर: गांधीजी के नेतृत्व में मुट्ठी भर सत्याग्रहियों ने ब्रिटिश साम्राज्य को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया।
7. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना किस आधार पर गले उतरती है? उत्तर: यह परिकल्पना इस आधार पर गले उतरती है कि इसके पीछे कोई अदृश्य सत्ता काम कर रही है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, राम-राज्य की स्थापना या महाभारत में पाण्डवों की जीत जैसी घटनाओं को सामान्य मानवीय तर्क के आधार पर क्यों नहीं समझा जा सकता? उत्तर: इन घटनाओं को सामान्य तर्क से नहीं समझा जा सकता क्योंकि इनमें शामिल मानवीय शक्ति (मुट्ठी भर वानर या पाँच पाण्डव) विरोधी शक्ति (सुदृढ़ लंका या अक्षौहिणी सेना) की तुलना में बहुत कम थी। इनकी सफलता केवल तभी समझी जा सकती है जब हम यह स्वीकार करें कि इनके पीछे दैवी शक्ति की महान महत्ता काम कर रही थी।
2. प्रश्न: गांधीजी का असहयोग आंदोलन सफल क्यों हुआ, जबकि पहले के बहादुर बलिदानी और देशभक्त भारत को पराधीनता से मुक्त क्यों नहीं करा पाए? उत्तर: लेखक के अनुसार, यद्यपि पहले भी बहादुर

बलिदानी और देशभक्त थे, पर गांधीजी के आंदोलन की सफलता में मानवीय पुरुषार्थ के साथ-साथ एक दिव्य सत्ता द्वारा प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल दिए जाने वाली शक्ति भी काम कर रही थी, जिससे असामान्य रूप से शक्तिशाली साम्राज्य को वापस लौटना पड़ा।

3. प्रश्न: "नदी का प्रवाह उलट देना एक प्रकार से असम्भव माना जाता है" - इस उपमा का प्रयोग लेखक ने किस संदर्भ में किया है? उत्तर: इस उपमा का प्रयोग समाज में गहराई तक जड़ जमा चुकी परम्पराओं और अवांछनीयताओं को बदलने की कठिनाई बताने के लिए किया गया है। जैसे नदी का प्रवाह उलटना असंभव है, वैसे ही इन गहरी मान्यताओं को बदलना भी केवल मानवीय प्रयासों से संभव नहीं है; इसके लिए समर्थ सत्ता के हस्तक्षेप की मान्यता अपनानी ही पड़ती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में दिए गए विभिन्न अवतारों और महापुरुषों (परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, गांधी) के उदाहरणों में क्या समान सूत्र है जो लेखक स्थापित करना चाहता है? उत्तर: इन सभी उदाहरणों में समान सूत्र यह है कि प्रत्येक युग में जब भी बड़े और असंभव लगने वाले परिवर्तन हुए हैं, उनके पीछे मानवीय पुरुषार्थ केवल एक माध्यम रहा है, जबकि वास्तविक संचालक शक्ति एक अदृश्य दैवी चेतना रही है। यह सूत्र इस विश्वास को पुष्ट करता है कि वर्तमान युग में भी जो बड़ा परिवर्तन अपेक्षित है, वह भी उसी दैवी शक्ति के हस्तक्षेप से ही संभव होगा।

2. प्रश्न: "समाधान उन्हीं का हो सकेगा, जो दैवी शक्ति की महान् महत्ता पर विश्वास कर सकेंगे"। इस वाक्य का वर्तमान समय के संदर्भ में क्या निहितार्थ है? उत्तर: इसका निहितार्थ यह है कि आज के युग में व्याप्त समस्याओं और चुनौतियों को देखकर जो लोग निराश हैं या प्रस्तावित समाधानों (जैसे इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य) को असंभव मानते हैं, वे केवल मानवीय क्षमता के सीमित दृष्टिकोण से देख रहे हैं। जो लोग इतिहास के उदाहरणों से सीखकर यह विश्वास करेंगे कि एक अदृश्य दैवी शक्ति भी कार्यरत है, केवल वे ही इस बड़े परिवर्तन की संभावना को समझ और स्वीकार कर पाएंगे तथा उसमें सहयोगी बन सकेंगे।

अध्याय 4: अदृश्य चेतना द्वारा सूत्र-संचालन

इस अध्याय में लेखक यह स्थापित करते हैं कि युग परिवर्तन जैसे विशाल आंदोलन मानवीय पुरुषार्थ से संभव नहीं हैं। इसके पीछे एक अदृश्य दैवी चेतना काम कर रही है, जिसके प्रमाण के रूप में वे 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के विस्तार, युग साहित्य के प्रकाशन और प्रज्ञापीठों के निर्माण जैसे कई उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, इक्कीसवीं सदी के गंगावतरण जैसी बड़ी योजना को सम्पन्न कर सकना किसकी परिधि से बाहर है? उत्तर: यह योजना मानवी पुरुषार्थ की परिधि से बाहर है।
2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज और उसके सूत्र-संचालक अपनी किन कमियों से भली-भाँति परिचित हैं? उत्तर: वे अपनी अयोग्यता, असमर्थता और साधनों की न्यूनता से भली प्रकार परिचित हैं।
3. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका और उसकी सहयोगी पत्रिकाओं की लगभग कितनी प्रतियाँ छपती थीं? उत्तर: लगभग साढ़े आठ लाख प्रतियाँ छपती थीं।
4. प्रश्न: एक पत्रिका सदस्य द्वारा कितने विचारशील लोगों को पत्रिका पढ़ाई जाती थी, जिससे लगभग एक करोड़ विचारशीलों का समूह बन गया? उत्तर: एक सदस्य द्वारा पाँच विचारशील लोगों को पत्रिका पढ़ाई जाती थी।
5. प्रश्न: युग साहित्य के रूप में लगभग कितनी छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी गईं? उत्तर: लगभग तीन हजार छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी गईं।
6. प्रश्न: देशभर में प्रज्ञापीठों के रूप में लगभग कितनी इमारतें बनाई गईं? उत्तर: देश के कोने-कोने में लगभग पाँच हजार से अधिक इमारतें बनाई गईं।
7. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण का उद्देश्य क्या था? उत्तर: इसका उद्देश्य लोकमानस में नवसृजन का उल्लास उभारना था, जिसमें लाखों व्यक्ति सम्मिलित हुए।
8. प्रश्न: विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के लिए किस शोध संस्थान की स्थापना की गई? उत्तर: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना की गई।
9. प्रश्न: सत्प्रवृत्ति संवर्धन के साथ-साथ दूसरा महत्वपूर्ण प्रयास क्या है? उत्तर: दूसरा प्रयास दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन है, जिसमें कुरीतियों, मूढमान्यताओं और अन्धविश्वासों का उन्मूलन शामिल है।
10. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में प्रतिदिन लगभग कितने लोगों के लिए भोजन बनता था और कितना पत्राचार होता था? उत्तर: भोजनालय में एक हजार से अधिक लोगों के लिए रसोई बनती थी और प्रतिदिन लगभग एक हजार पत्रों का पत्राचार होता था।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक अपने इस दावे का क्या आधार प्रस्तुत करते हैं कि युग परिवर्तन के पीछे कोई अदृश्य सत्ता काम कर रही है? उत्तर: लेखक तर्क, तथ्य, प्रमाण और उदाहरणों का एक बड़ा समूह प्रस्तुत करते हैं। वे 'अखण्ड ज्योति' के विशाल पाठक वर्ग, हजारों पुस्तकों के प्रकाशन, पाँच हजार से अधिक प्रज्ञापीठों का निर्माण, और ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना जैसे कार्यों का उल्लेख करते हैं, जो किसी सामान्य व्यक्ति या संगठन के

लिए असंभव हैं। यही आश्चर्यजनक सफलताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि इनके पीछे कोई अदृश्य सत्ता है।

2. प्रश्न: मिशन ने अपनी उपलब्धियों का व्यापक विज्ञापन क्यों नहीं किया? उत्तर: मिशन ने विज्ञापनबाजी से सदैव दूर रहने की नीति अपनाई। इसका उद्देश्य अपनी शक्ति का हर कण केवल सृजन के प्रयोजनों में लगाना था, न कि प्रचार में।

3. प्रश्न: दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के अंतर्गत किन-किन सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया जा रहा है? उत्तर: इसके अंतर्गत खर्चीली शादियाँ, नशेबाजी, विचार और आचरण की भ्रष्टता, जाति-पाँति के नाम पर ऊँच-नीच, भिक्षा-व्यवसाय और पर्दा-प्रथा जैसी अनेक कुप्रथाओं और कुरीतियों का खुलकर विरोध किया जा रहा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "बटलोई में पकते भात में से कुछ चावल निकाल कर, पकने न पकने की बात जाँचने की तरह" - इस मुहावरे का प्रयोग लेखक ने किस गहरे अर्थ को समझाने के लिए किया है? उत्तर: इस मुहावरे का प्रयोग यह समझाने के लिए किया गया है कि अदृश्य सत्ता के विराट कार्य को पूरी तरह से समझना संभव नहीं है, लेकिन उसके कुछ प्रतिनिधि उदाहरणों (जैसे 'अखण्ड ज्योति' का विस्तार, युग साहित्य आदि) को देखकर ही पूरे अभियान की दिशा और सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है। जैसे कुछ चावलों से पूरे बर्तन के चावल के पकने का पता चल जाता है, वैसे ही ये गिनी-चुनी उपलब्धियाँ उस महान अदृश्य शक्ति के कार्यरत होने का अकाट्य प्रमाण हैं।

2. प्रश्न: लेखक यह कैसे सिद्ध करते हैं कि मिशन की उपलब्धियाँ किसी "शरीरधारी नगण्य व्यक्ति" का श्रेय नहीं हो सकती? उत्तर: लेखक तर्क देते हैं कि मिशन का विस्तार ('अखण्ड ज्योति' के पाठक, प्रज्ञापीठ, साहित्य) और उसकी जटिल कार्यप्रणाली (प्रतिदिन हजार लोगों का भोजन, पत्राचार, प्रशिक्षण, शोध) इतनी विशाल है कि इसे किसी सामान्य व्यक्ति की योजना या पुरुषार्थ से संभव नहीं माना जा सकता। वे कहते हैं कि समाधान केवल वही लोग पा सकते हैं जो यह अनुभव कर सकें कि इस समूचे प्रयास के पीछे एक अदृश्य सत्ता काम कर रही है।

अध्याय 5: बड़े प्रयोजन के लिए बड़े कदम

इस अध्याय में चेतना के विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया गया है। लेखक 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका को चुल्लू भर जल में उत्पन्न मत्स्यावतार का प्रतीक बताते हैं और कहते हैं कि सतयुग की स्थापना के लिए श्रेष्ठता और सज्जनता का बहुमत में होना अनिवार्य है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मत्स्यावतार की एक ही रटन या आकांक्षा क्या थी? उत्तर: उसकी एक ही आकांक्षा थी - विस्तार, विस्तार और विस्तार।
2. प्रश्न: लेखक ने स्वर्ग और नरक की क्या परिभाषा दी है? उत्तर: नरक वह वातावरण है जिसमें पिछड़ों और उद्दण्डों का बाहुल्य होता है, जबकि स्वर्ग मात्र सज्जनों की और सत्प्रवृत्तियों की बहुलता वाली स्थिति है।
3. प्रश्न: सतयुग और कलियुग में मुख्य अन्तर क्या है? उत्तर: सतयुग में जन समुदाय का बहुमत श्रेष्ठता और शालीनता से भरा होता है, जबकि कलियुग में दुर्जनों और दुष्प्रवृत्तियों की बहुलता पाई जाती है।
4. प्रश्न: लेखक ने चुल्लू भर पानी में उत्पन्न हुई मछली की तुलना किससे की है? उत्तर: इसकी तुलना 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका से की गई है।
5. प्रश्न: टेलीविजन प्रसारण का उदाहरण किस बात को समझाने के लिए दिया गया है? उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि जैसे एक केंद्र से प्रसारण होता है और असंख्य टीवी उसे ग्रहण कर लेते हैं, वैसे ही एक दैवी प्रेरणा (प्रज्ञावतार) से ऊर्जा प्रसारित होती है और असंख्य लोग (अखण्ड ज्योति परिवार) उसे ग्रहण कर उत्कृष्टता के लिए कार्य करने लगते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, संसार में सुख-शांति का वातावरण बनाने के लिए क्या आवश्यक है? उत्तर: लेखक के अनुसार, संसार में सुख-शांति का वातावरण बनाने के लिए श्रेष्ठता का अभिवर्धन (विकास) अनिवार्य है। सज्जनता को न केवल अकेला होना चाहिए, बल्कि उसे लगातार सुविस्तृत भी होते जाना चाहिए।
2. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका को केवल छपे हुए कागजों का पैकेट समझना क्यों गलत है? उत्तर: इसे केवल छपे कागज समझना गलत है क्योंकि इसका उद्देश्य केवल जानकारी बढ़ाना नहीं है। इसने अपने पाठकों को चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता के एक विशेष स्तर तक पहुँचाने में सफलता पाई है और आधी शताब्दी से अधिक समय से इसकी गरिमा एक वट वृक्ष की तरह बढ़ी है।
3. प्रश्न: मिशन की उपलब्धियों का वास्तविक श्रेय किसे दिया गया है? उत्तर: इन उपलब्धियों का श्रेय किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, बल्कि 'अखण्ड ज्योति' परिवार के सदस्यों के सामूहिक पुरुषार्थ और अनुदान को दिया गया है। तात्त्विक रूप से यह श्रेय मत्स्यावतार या प्रज्ञावतार की प्रेरणा को है, जो एक केंद्र से प्रसारित होकर सभी में कार्य कर रही है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "अल्पमत को सदा हारती हुई पाली में बैठना पड़ा है" - इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या महत्व है? उत्तर: इस कथन का गहरा महत्व है। इसका अर्थ है कि समाज में अच्छाई या श्रेष्ठ विचार रखने वाले

लोगों की संख्या यदि कम (अल्पमत) होगी, तो वे कभी भी बुराई पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। युग परिवर्तन या सतयुग की स्थापना तभी संभव है जब सज्जनता और सत्प्रवृत्तियाँ समाज में बहुमत में हों, क्योंकि शासन सत्ता से लेकर सामाजिक वातावरण तक, हर जगह बहुमत ही प्रभावी होता है। इसलिए, नवयुग के निर्माण के लिए केवल कुछ लोगों का अच्छा होना पर्याप्त नहीं, बल्कि अच्छाई का व्यापक विस्तार अनिवार्य है।

2. प्रश्न: इस अध्याय में 'विस्तार' शब्द पर इतना जोर क्यों दिया गया है? मत्स्यावतार के प्रतीक के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? उत्तर: 'विस्तार' पर जोर इसलिए दिया गया है क्योंकि यही युग परिवर्तन की सफलता की कुंजी है। मत्स्यावतार का प्रतीक (एक कीड़े से पूरे ब्रह्मांड को घेर लेना) यह संदेश देता है कि एक छोटा सा सात्विक विचार या प्रयास ('अखण्ड ज्योति' पत्रिका) जब दैवी चेतना से जुड़ता है, तो उसे तब तक विस्तार करते रहना चाहिए जब तक वह समाज की हर बुराई और नकारात्मकता पर हावी न हो जाए। विस्तार के बिना श्रेष्ठता का प्रभाव सीमित रहेगा और कलियुगी प्रवृत्तियों को हराया नहीं जा सकेगा।

अध्याय 6: नए लक्ष्य—नए उद्घोष

इस अध्याय में युग परिवर्तन के लिए निर्धारित नए लक्ष्यों और नारों का वर्णन है, जैसे "21 वीं सदी उज्ज्वल भविष्य"। साथ ही, इस महान कार्य के लिए समुदाय के विस्तार की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग परिवर्तन के इस दौर में कौन सा नारा प्रमुखता से उठाया गया है? उत्तर: "21 वीं सदी उज्ज्वल भविष्य" का नारा प्रमुखता से उठाया गया है।

2. प्रश्न: कौन से उद्घोष किसी आवेशग्रस्त केंद्र से ही उभर सकते हैं? उत्तर: "नया इंसान बनाएँगे, नया संसार बसाएँगे, नया भगवान् उतारेंगे" जैसे उद्घोष किसी आवेशग्रस्त केंद्र से ही उभर सकते हैं, सामान्य जनता के लिए यह "सनक" जैसी बात हो सकती है।

3. प्रश्न: मत्स्यावतार या प्रज्ञावतार का प्रमुख लक्ष्य क्या रहा है? उत्तर: विस्तार करना ही मत्स्यावतार या प्रज्ञावतार का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

4. प्रश्न: बड़े मोर्चे फतह करने के लिए किस चीज़ की आवश्यकता होती है? उत्तर: बड़े मोर्चे फतह करने के लिए सैन्य दल का विस्तार करने और उनके क्रिया-कौशल बढ़ाने की आवश्यकता होती है।

5. प्रश्न: "नया संसार बसाने" की योजना का उपयुक्त आधार कब खड़ा होगा? उत्तर: जब सृजन शिल्पियों की संख्या एक करोड़ तक जा पहुँचेगी, तब "नया संसार बसाने" की योजना का उपयुक्त आधार खड़ा हो जाएगा।

6. प्रश्न: आरम्भ में अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रथम अंक कितनी संख्या में छपा था? उत्तर: आरम्भ में अखण्ड ज्योति का प्रथम अंक 500 की संख्या में छपा था।

7. प्रश्न: लेखक के अनुसार, क्या लम्बी मंजिल पार करने निकला कारवाँ बीच में ही थक जाएगा? उत्तर: लेखक को ऐसा विश्वास नहीं है। वे कहते हैं कि जिस समर्थ सत्ता ने यह सब शुरू किया है, वह अपने उत्साह का समापन नहीं करेगी और यह विस्तार क्रम रुकने वाला नहीं है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने एक करोड़ सृजन-शिल्पियों की संख्या को संसार की सैन्य शक्ति से कैसे जोड़ा है? उत्तर: लेखक तर्क देते हैं कि संसार भर में सैनिकों की संख्या एक करोड़ से कम नहीं है, जिनका काम केवल लड़ना (विनाश) है। इसलिए, जिन्हें सृजन का महान कार्य करना है, उनकी संख्या और क्षमता तो और भी अधिक होनी चाहिए। इस तुलना से वे सृजन कार्य के लिए एक विशाल और समर्पित समुदाय की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

2. प्रश्न: "जलते तवे पर एक बूँद पानी की तरह नगण्य" - इस उपमा का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है? उत्तर: इस उपमा का प्रयोग यह बताने के लिए किया गया है कि भारत की 90 करोड़ और विश्व की 600 करोड़ आबादी का कायाकल्प करने जैसे विशाल लक्ष्य के सामने एक करोड़ लोगों का समुदाय भी बहुत छोटा है। यह उपमा कार्य की विशालता और उसके लिए आवश्यक प्रयासों के पैमाने को दर्शाती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "साधनों को तो मनुष्य के संकल्प बल का चुम्बकत्व कहीं से भी खींच-घसीट लेता है।" इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या गहरा अर्थ है? उत्तर: इसका गहरा अर्थ यह है कि युग परिवर्तन जैसे महान कार्य के लिए भौतिक साधनों की कमी मुख्य बाधा नहीं है, बल्कि असली आवश्यकता एक मजबूत सामूहिक संकल्प शक्ति की है। यदि सृजन-शिल्पियों का एक विशाल समुदाय दृढ़ संकल्पित हो जाए, तो आवश्यक साधन (साधन) अपने आप आकर्षित होकर एकत्रित हो जाएँगे। यह प्राथमिकता को साधनों से हटाकर मानवीय चेतना और संकल्प पर केंद्रित करता है।

2. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, छोटे बीज से विशाल वृक्ष बनने की प्रक्रिया और 'अखण्ड ज्योति' के विस्तार में क्या समानता है, और यह भविष्य के लिए क्या संकेत देती है? उत्तर: दोनों में समानता यह है कि एक अत्यंत छोटी और साधनहीन शुरुआत ('अखण्ड ज्योति' के 500 अंक) जब एक महान उद्देश्य से जुड़ती है, तो वह समय के साथ सहज रूप से विस्तार पाती है। यह भविष्य के लिए यह संकेत देती है कि सृजन-शिल्पियों का जो छोटा सा समूह आज दिख रहा है, वह भी नियति के निर्धारण के अनुसार बढ़ता रहेगा और अपने लक्ष्य (युग परिवर्तन) को प्राप्त करके ही रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे बीज से वृक्ष बनना निश्चित होता है।

अध्याय 7: समय की माँग के अनुरूप पुरुषार्थ

इस अध्याय में युगसंधि के इस महत्वपूर्ण समय में अपने पुरुषार्थ को तीव्र करने का आह्वान किया गया है। इसमें 'एक से पाँच, पाँच से पच्चीस' बनने की विस्तार प्रक्रिया पर जोर दिया गया है, ताकि मिशन के विकास की गति को पाँच गुना बढ़ाया जा सके।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युगसंधि की इस बेला में वातावरण कैसा होता जा रहा है? उत्तर: युगसंधि की इस बेला में वातावरण क्रमशः अधिक गरम होता जा रहा है।
2. प्रश्न: सृजन-शिल्पियों का उत्साह और पुरुषार्थ किसकी तरह उछल रहा है? उत्तर: उनका उत्साह, साहस और पुरुषार्थ किसी सशक्त फव्वारे की तरह उछल और मचल रहा है।
3. प्रश्न: लेखक ने अखण्ड ज्योति के पाठकों से किस परम्परा को निष्ठापूर्वक निभाने का आग्रह किया है? उत्तर: यह आग्रह किया गया है कि पत्रिका का हर अंक कम से कम पाँच लोगों द्वारा पढ़ा जाता रहे।
4. प्रश्न: पहले 'एक से पाँच' का सिलसिला चलता रहा, अब नई चुनौती क्या है? उत्तर: अब नई चुनौती 'पाँच को पच्चीस' बनाने की है।
5. प्रश्न: अनुपाठकों को अब कौन-सी प्रकृति छोड़नी चाहिए? उत्तर: उन्हें दूसरों से माँगकर पढ़ने वाली बचपन की सहायता पर निर्भर रहने की प्रकृति छोड़नी चाहिए और स्वयं पूर्ण सदस्य बनना चाहिए।
6. प्रश्न: 'पाँच से पच्चीस' वाला विस्तार क्रम कैसे पूरा होगा? उत्तर: यह तब पूरा होगा जब हर पुराना सदस्य चार नए सदस्य बनाएगा, जिससे उसकी अपनी पाँच की मंडली बन जाएगी, और फिर वे सब मिलकर अपने पाँच-पाँच अनुपाठक बनाएँगे।
7. प्रश्न: इस विस्तार प्रक्रिया से मिशन के विकास पर क्या प्रभाव पड़ेगा? उत्तर: इससे मिशन एक ही वर्ष में अपना पाँच गुना विस्तार कर लेगा और विकास की गति पाँच गुनी बढ़ जाएगी।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: 'एक से पाँच और पाँच से पच्चीस' वाले विस्तार क्रम का युग परिवर्तन के महान लक्ष्य से क्या संबंध है? उत्तर: इसका सीधा संबंध है। युग परिवर्तन का लक्ष्य ('मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण') बहुत बड़ा है। उसे प्राप्त करने के लिए सृजन-शिल्पियों के समुदाय का तीव्र गति से विस्तार होना आवश्यक है। 'पाँच से पच्चीस' का क्रम इसी विस्तार को सुनिश्चित करने की एक व्यावहारिक योजना है, ताकि निर्धारित समय में लक्ष्य तक पहुँचा जा सके।
2. प्रश्न: लेखक ने अनुपाठकों को "तरुणों जैसी रीति-नीति" अपनाने के लिए क्यों कहा है? उत्तर: लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि तरुण अवस्था जिम्मेदारी लेने, देने और बढ़ाने की अवस्था होती है। अब तक जो

अनुपाठक दूसरों से पत्रिका माँगकर ज्ञान ले रहे थे (बचपन जैसी निर्भरता), अब उन्हें स्वयं जिम्मेदारी उठाकर पत्रिका का सदस्य बनना चाहिए और दूसरों तक इस ज्ञान को पहुँचाने (देने और बढ़ाने) का पुरुषार्थ करना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में बताई गई विस्तार योजना को मत्स्यावतार के उपक्रम से कैसे जोड़ा गया है? उत्तर: मत्स्यावतार का मूल उपक्रम था 'तुच्छ से विराट' बनना, यानी निरंतर विस्तार करना। 'एक से पाँच, पाँच से पच्चीस' की योजना इसी मत्स्यावतार के सिद्धांत का व्यावहारिक रूप है। जैसे मत्स्य ने छोटे से कीड़े के रूप से बढ़कर पूरे ब्रह्मांड को घेर लिया था, वैसे ही यह योजना प्रत्येक व्यक्ति को एक छोटी इकाई से शुरू करके अपने प्रभाव क्षेत्र को कई गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है, ताकि अंततः यह सृजन का आंदोलन पूरे समाज पर छा जाए।

2. प्रश्न: पच्चीस की मंडली की तुलना २४ अवतारों, देवताओं और ऋषियों के समूह से क्यों की गई है? इसका क्या प्रतीकात्मक महत्व है? उत्तर: इस तुलना का गहरा प्रतीकात्मक महत्व है। जैसे २४ अवतारों, ऋषियों आदि ने मिलकर एक समग्र अध्यात्म विज्ञान की संरचना की और नर-वानरों को देव-मानव बनाया, उसी प्रकार पच्चीस प्रज्ञावान सदस्यों का एक छोटा समूह भी अपनी संयुक्त शक्ति से समाज में बड़ा परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। यह बताता है कि संख्या छोटी होने पर भी यदि उद्देश्य महान हो और सामूहिक प्रयास हो, तो हनुमान जैसा पराक्रम दिखाया जा सकता है।

अध्याय 8: समझदारी शंका में नहीं—सहयोग में है

इस अध्याय में मिशन के कार्यों पर शंका करने के बजाय सहयोग करने की अपील की गई है। इसमें बताया गया है कि अखण्ड ज्योति और युग साहित्य का प्रकाशन लाभ कमाने के लिए नहीं, बल्कि आदर्शों के प्रचार के लिए है। संगठन को मजबूत करने के लिए जन्मदिन मनाने जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों का सुझाव भी दिया गया है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अखण्ड ज्योति पत्रिका का मूल्य किस आधार पर तय किया जाता है? उत्तर: इसका मूल्य मात्र कागज, छपाई और डाक खर्च के आधार पर तय किया जाता है; इसमें किसी का पारिश्रमिक नहीं जोड़ा जाता।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, किन लोगों की साँस से दुर्गन्ध ही उठती रहेगी? उत्तर: जिनके मुँह में पायरिया, पेट में अल्सर और आहार में लहसुन घुसा होता है, उनकी साँस से दुर्गन्ध ही उठती रहेगी, अर्थात् जो स्वयं नकारात्मकता से भरे हैं वे दूसरों में दोष ही देखेंगे।

3. प्रश्न: सज्जनों का संगठन किस रूप में प्रकट होता है? उत्तर: सज्जनों का संगठन ही दैवी शक्ति के रूप में प्रकट होता है और लक्ष्य पर ब्रह्मास्त्र की तरह टूटता है।
4. प्रश्न: संगठन में घनिष्ठता बढ़ाने के लिए क्या उपाय सुझाया गया है? उत्तर: हर सदस्य का जन्मदिन मनाने का उपाय सुझाया गया है, जिसमें दीपयज्ञ, सामूहिक गायत्री पाठ और सत्प्रवृत्ति बढ़ाने का संकल्प लिया जा सकता है।
5. प्रश्न: जन्मदिन के आयोजन में आतिथ्य कैसा होना चाहिए? उत्तर: आतिथ्य सौंफ-सुपाड़ी तक सीमित रहना चाहिए ताकि गरीब-अमीर किसी को भी विषमता का अनुभव न हो।
6. प्रश्न: रचनात्मक क्रिया-कलापों के लिए धन कैसे जुटाया जा सकता है? उत्तर: हर सदस्य द्वारा नियमित समयदान और अंशदान निकालने से जो राशि जमा होगी, उससे रचनात्मक कार्य सरलता से चल सकते हैं।
7. प्रश्न: लेखक ने कम से कम कितना अंशदान करने का सुझाव दिया है? उत्तर: महीने में एक दिन की कमाई, या कम से कम पचास पैसे रोज का अंशदान करने का सुझाव दिया है।
8. प्रश्न: समयदान और अंशदान का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए? उत्तर: अंशदान के पैसों से युग परिवर्तन वाला साहित्य मँगाना चाहिए और समयदान का उपयोग उसे जन-जन तक पहुँचाने, पढ़ाने या सुनाने में करना चाहिए।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मिशन की आर्थिक पारदर्शिता पर लेखक इतना जोर क्यों दे रहे हैं? उत्तर: लेखक इस पर इसलिए जोर दे रहे हैं ताकि लोगों के मन में यह शंका न रहे कि यह कोई व्यावसायिक उपक्रम है। जब लोग यह समझेंगे कि यह मिशन लाभ के लिए नहीं, बल्कि विशुद्ध रूप से आदर्शों के प्रचार के लिए काम कर रहा है, तभी वे पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ इसमें सहयोग करेंगे।
2. प्रश्न: "भाव शून्यों के लिए तो झपटना-हड़पना ही एकमात्र अभ्यास में रहता है" - इस कथन का क्या आशय है? उत्तर: इसका आशय यह है कि जिन लोगों के भीतर संवेदना और उदारता (भाव) नहीं होती, उनका स्वभाव केवल स्वार्थ के लिए दूसरों से छीनना और जमा करना होता है। वे कभी भी समाज के लिए समय या धन का त्याग (समयदान, अंशदान) नहीं कर सकते। त्याग और सहयोग केवल वही कर सकते हैं जिनमें भाव-संवेदनाएँ जीवित हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में ईसाई मिशन, साम्यवादी प्रचारक और गीता प्रेस का उदाहरण क्यों दिया गया है? उत्तर: ये उदाहरण यह सिद्ध करने के लिए दिए गए हैं कि महान विचारों और आदर्शों का प्रचार करने वाले संगठन हमेशा लाभ के लिए काम नहीं करते। जैसे ये संस्थाएँ अपने-अपने सिद्धांतों को फैलाने के लिए

लागत मूल्य पर या निःस्वार्थ भाव से साहित्य वितरित करती हैं, उसी प्रकार युग निर्माण मिशन भी अपने आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए बिना लाभ कमाए साहित्य प्रकाशित कर रहा है। यह अखण्ड ज्योति और युग साहित्य की निःस्वार्थ प्रकृति को प्रमाणित करता है।

2. प्रश्न: जन्मदिन मनाने जैसे छोटे आयोजन को लेखक एकरसता तोड़ने और "सम्मिलित शक्ति उत्पन्न करने" का उपाय क्यों मानते हैं? उत्तर: लेखक इसे एक शक्तिशाली उपाय मानते हैं क्योंकि साप्ताहिक सत्संग जैसे नियमित कार्यक्रम कभी-कभी नीरस हो सकते हैं। जन्मदिन का आयोजन एक व्यक्तिगत और भावनात्मक जुड़ाव पैदा करता है। जब सभी सदस्य किसी एक के विशेष दिन पर एकत्रित होते हैं, तो यह पारस्परिक घनिष्ठता को बढ़ाता है, संगठन में नवीनता लाता है और एक साझा उद्देश्य (शुभकामना देना, सत्संकल्प लेना) के लिए सामूहिक ऊर्जा या "सम्मिलित शक्ति" उत्पन्न करता है। यह छोटी-छोटी भावपूर्ण गतिविधियों से संगठन को जीवंत बनाए रखने की एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है।

अध्याय 9: वह जिसकी उपेक्षा नहीं ही करें

इस अध्याय में भौतिक पुरुषार्थ के साथ-साथ आध्यात्मिक ऊर्जा की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। लेखक बताते हैं कि बड़े कार्यों के लिए, जैसे युग परिवर्तन, व्यक्ति को केवल अपनी क्षमता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि ईश्वरीय चेतना (परमात्मा) से जुड़ना चाहिए, जो ऊर्जा का मूल स्रोत है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बड़े काम करने के लिए मनुष्य को किसकी आवश्यकता पड़ती है? उत्तर: बड़े काम करने के लिए मनुष्य को बिजली, भाप आदि के माध्यम से उत्पन्न ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है।
2. प्रश्न: चेतना के क्षेत्र की ऊर्जा को क्या कहते हैं? उत्तर: चेतना क्षेत्र की ऊर्जा को भगवान् कहते हैं।
3. प्रश्न: आत्मा और परमात्मा के मिलने पर क्या होता है? उत्तर: आत्मा और परमात्मा के मिलने पर साधारण व्यक्ति भी देवमानव की भूमिका निभाने लगते हैं।
4. प्रश्न: जीव और ब्रह्म के मिलने पर उनकी शक्ति कैसी हो जाती है? उत्तर: जैसे एक और एक मिलकर ग्यारह (११) हो जाते हैं, वैसे ही जीव और ब्रह्म के मिलने से शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।
5. प्रश्न: असली भगवान को पाने के लिए क्या करना पड़ता है? उत्तर: असली भगवान को पाने के लिए बड़ा साहस अपनाना पड़ता है और अपनी उत्कृष्टता तथा उदारता को प्रत्यक्ष रूप में प्रकट करना पड़ता है।
6. प्रश्न: सुदामा और विभीषण जैसे लोग अतुलित बलधारी कैसे बन गए? उत्तर: वे अपनी निजी क्षमता में कम थे, पर किसी बड़े (ईश्वरीय सत्ता) का सहयोग प्राप्त कर लेने पर अतुलित बलधारी बन गए।
7. प्रश्न: खिलौने वाली गाय और असली गाय में क्या अंतर है? उत्तर: खिलौने वाली गाय न दूध देती है और न

बछड़ा, जबकि असली गाय को पालने के लिए कीमत और जिम्मेदारी दोनों उठानी पड़ती है। इसी तरह, प्रतीकात्मक पूजा और वास्तविक ईश्वरीय अनुदान में अंतर है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "शरीरधारी तो एक और एक मिलकर दो ही होते हैं, पर जीव और ब्रह्म की दो इकाइयाँ समता अपना लेती हैं, तब उनकी स्थिति ११ जैसी होने में देर नहीं लगती।" इस कथन का क्या तात्पर्य है? उत्तर: इसका तात्पर्य यह है कि जब दो व्यक्ति अपनी भौतिक शक्ति मिलाते हैं तो उनकी शक्ति केवल दोगुनी होती है ($1+1=2$)। लेकिन जब एक जीवात्मा (व्यक्ति) अपनी चेतना को परमात्मा (ब्रह्म) से जोड़ लेता है, तो उसकी शक्ति ग्यारह गुनी हो जाती है (1 और 1 मिलकर 11), जो एक असाधारण और गुणात्मक वृद्धि का प्रतीक है। यह आध्यात्मिक जुड़ाव की अपार शक्ति को दर्शाता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पूजा-उपासना और भगवान से वास्तविक मिलन में क्या अंतर है? उत्तर: लेखक के अनुसार, पूजा-उपासना एक सरल क्रिया-कलाप है, जो भगवान की स्मृति तो दिला सकता है, पर वास्तविक अनुदान नहीं। असली भगवान का मिलन व्यक्ति के जीवन में तत्काल भारी हलचल और सकारात्मक परिवर्तन लाता है। इसके लिए व्यक्ति को अपनी पुरानी जीवनचर्या (पैसा और वासना) को छोड़कर उत्कृष्टता और उदारता का जीवन अपनाना पड़ता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस अध्याय में पत्नी के ससुराल जाने और पति की सम्पदा पर अधिकार पाने के उदाहरण का क्या गहरा आध्यात्मिक अर्थ है? उत्तर: इस उदाहरण का गहरा आध्यात्मिक अर्थ है कि जिस प्रकार एक स्त्री को पति का सर्वस्व पाने के लिए अपना मायका छोड़कर ससुराल में पूरी तरह समर्पित होना पड़ता है, उसी प्रकार एक भक्त को परमात्मा का अनुग्रह पाने के लिए अपने पुराने स्वार्थपूर्ण जीवन (अहंकार, वासना) को त्यागकर उत्कृष्टता और उदारता के मार्ग पर पूरी तरह समर्पित होना पड़ता है। समर्पण के बिना आध्यात्मिक उपलब्धि या ईश्वरीय अनुदान संभव नहीं है।

2. प्रश्न: लेखक युग सृजन के कार्यकर्ताओं ("इंजीनियरों") और पर्वतारोहियों की तुलना क्यों करते हैं? इससे वे क्या संदेश देना चाहते हैं? उत्तर: इस तुलना के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि युग परिवर्तन का कार्य कोई साधारण काम नहीं है, बल्कि यह एक चुनौतीपूर्ण और ऊँचा लक्ष्य है। जैसे इंजीनियरों को विशेष योग्यता और जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है या पर्वतारोहियों को शिखर पर पहुँचने के लिए असाधारण साहस दिखाना पड़ता है, उसी प्रकार युग सृजन के कार्यकर्ताओं को भी सामान्य लोगों से अधिक योग्य, जिम्मेदार और साहसी बनना होगा। आलसी और कमजोर संकल्प वाले लोग यह महान कार्य नहीं कर सकते।

अध्याय 10: ईश चेतना से जुड़ें

इस अध्याय में ईश्वर को अपने अंतःकरण में खोजने और उसके साथ जुड़ने पर बल दिया गया है। जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तो व्यक्ति का दृष्टिकोण और क्रिया-कलाप पूरी तरह बदल जाता है और उसे निरंतर श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सही स्थान कौन-सा है? उत्तर: ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सही स्थान अपना अंतःकरण है।
2. प्रश्न: लेखक ने कस्तूरी मृग का उदाहरण क्यों दिया है? उत्तर: यह समझाने के लिए कि जैसे मृग अपनी ही नाभि में स्थित कस्तूरी के लिए बाहर भटकता है, वैसे ही मनुष्य ईश्वर को बाहर तीर्थों और देवालयों में खोजता है, जबकि वह उसके अपने अंतःकरण में ही है।
3. प्रश्न: दैवी सत्ता किसी पर अनुग्रह करती है, तो क्या परिवर्तन होता है? उत्तर: उसके मानस और क्रिया-कलाप में आश्चर्यजनक परिवर्तन होता है; वह उसे क्षुद्रता (बुराई) की कीचड़ से निकालकर महानता से सजाती है।
4. प्रश्न: "लोहा पारस को छूकर सोना बनता है" - यह उक्ति कब सार्थक होती है? उत्तर: यह उक्ति तब सार्थक होती है, जब आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ जाती है।
5. प्रश्न: भगवान से जुड़ने पर किस प्रकार के दुहरे आदेश मिलने लगते हैं? उत्तर: "जागो और जगाओ, उठो और उठाओ, चलो और चलाओ" जैसे दुहरे आदेशों की झड़ी लग जाती है, जिसका अर्थ है स्वयं श्रेष्ठ बनना और दूसरों को भी श्रेष्ठ बनाना।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: माता द्वारा शिशु को साफ करके गोद में उठाने का उदाहरण भगवद् भक्ति के संबंध में क्या समझाता है? उत्तर: यह उदाहरण समझाता है कि जैसे माँ अपने बच्चे को मल-मूत्र से साफ करने के बाद ही गोद में लेती है, वैसे ही ईश्वर भी किसी व्यक्ति पर कृपा करने से पहले उसके मन और कर्म की अशुद्धियों (क्षुद्रता) को दूर करता है। भगवद् भक्ति के लिए अंतःकरण की पवित्रता पहली शर्त है।
2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "युगपुरुष" या "युग देवता" कौन हैं? उत्तर: लेखक के अनुसार, ये वे भगवद् भक्त हैं जो ईश्वर से मिले तात्कालिक आदेशों (जैसे- जागो और जगाओ) को पूरा करने में हर क्षण लगे रहते हैं और जिन्हें इसी कारण यह श्रेय और संतोष मिलता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "आग के साथ यदि ईंधन घनिष्ठता स्थापित करेगा, तो उसका समूचा स्वरूप अग्रिमय हुए बिना नहीं

रहता।" इस रूपक का आत्मा-परमात्मा के संबंध में क्या विश्लेषण है? उत्तर: यह एक शक्तिशाली रूपक है। इसका विश्लेषण यह है कि जैसे ईंधन का अपना कोई प्रकाश या ताप नहीं होता, लेकिन आग के संपर्क में आते ही वह पूरी तरह अग्नि का ही रूप ले लेता है, उसी प्रकार सामान्य जीवात्मा में सीमित शक्ति होती है। लेकिन जब वह परमात्मा (जो चेतना की अग्नि है) से घनिष्ठता स्थापित कर लेता है, तो उसका पूरा अस्तित्व, विचार और कर्म परमात्मा की दिव्य शक्ति से प्रकाशित और ओजस्वी हो जाता है। वह फिर साधारण जीव नहीं रहता, बल्कि दैवी गुणों का वाहक बन जाता है।

अध्याय 11: थोड़ा ही सही, नियमित करें

इस अध्याय में युग चेतना के विस्तार के लिए छोटे, सरल और नियमित रूप से किए जा सकने वाले व्यावहारिक कार्यक्रमों पर जोर दिया गया है, जैसे- साप्ताहिक सत्संग, दीपयज्ञ और "ज्ञानरथ" (चल प्रज्ञा मंदिर) का संचालन।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लोगों में युग चेतना का आलोक जगाने के लिए कौन-से कार्यक्रम बताए गए हैं? उत्तर: साप्ताहिक सत्संग, जन्मदिन मनाना, दीपयज्ञ और पर्वों पर आयोजन करना।
2. प्रश्न: दीपयज्ञ को समय के अनुरूप क्यों माना गया है? उत्तर: क्योंकि यह कम खर्चीला है, थोड़े समय में संपन्न हो जाता है और इसे कोई भी साधारण शिक्षित व्यक्ति करा सकता है।
3. प्रश्न: "चल प्रज्ञा मन्दिर" का दूसरा नाम क्या है? उत्तर: इसका दूसरा नाम "ज्ञानरथ" है।
4. प्रश्न: ज्ञानरथ के संचालन का नया तरीका क्या है? उत्तर: अब ज्ञानरथ का संचालन पुस्तक-विक्री के लिए नहीं, बल्कि एक विशुद्ध चल-पुस्तकालय के रूप में किया जा रहा है, जिसमें लोगों को मुफ्त में पुस्तकें पढ़ने के लिए दी जाती हैं।
5. प्रश्न: ज्ञानरथ के संचालन के लिए समय और धन की व्यवस्था कैसे की जा सकती है? उत्तर: अपने दो घंटे के समयदान का उपयोग करके और प्रतिदिन एक रुपये या अपने बनाए चार साथियों की मदद से ("ज्ञानघट" रखकर) धन की व्यवस्था की जा सकती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने पुराने कर्मकांडों की तुलना में दीपयज्ञ को बेहतर क्यों बताया है? उत्तर: क्योंकि पुराने कर्मकांड खर्चीले होते हैं, उनमें बहुत सारे विधि-विधान होते हैं और दक्षिणा की आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत, दीपयज्ञ सरल, सस्ता और सुलभ है, जिससे धर्म के माध्यम से लोक शिक्षण (युग चेतना का प्रसार) का उद्देश्य आसानी से पूरा हो सकता है।

2. प्रश्न: ज्ञानरथ को अचल देवालयों से अधिक उपयोगी क्यों कहा गया है? उत्तर: क्योंकि अचल देवालयों तक केवल आसपास के लोग ही पहुँच पाते हैं और उनके निर्माण व रखरखाव में बहुत खर्च और झंझट होता है। जबकि ज्ञानरथ (चल प्रज्ञा मंदिर) घर-घर और गली-गली तक पहुँचकर, बिना किसी बड़े खर्च के, असंख्य लोगों तक युग चेतना की प्राण ऊर्जा पहुँचा सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "धर्म, भिखारियों का पेशा नहीं है... यह क्षेत्र वस्तुतः दे सकने वाली उमंगों से भरे-पूरे शूरवीरों का है।" इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या महत्व है? उत्तर: इस कथन का गहरा महत्व है। यह स्पष्ट करता है कि धर्म और अध्यात्म केवल कुछ माँगने (जैसे मनोकामना पूर्ति) का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए अपना समय, साधन और पुरुषार्थ देने (त्याग) का मार्ग है। युग परिवर्तन का कार्य केवल वे "शूरवीर" ही कर सकते हैं जो कृपणता और स्वार्थ छोड़कर उदारतापूर्वक देने का साहस रखते हैं, न कि वे जो केवल बैठकर लाभ की कामना करते हैं।

अध्याय 12: प्राण-चेतना प्रखर बनाए रखें

यह अंतिम अध्याय प्रेरणा और ऊर्जा को निरंतर बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर देता है। इसके लिए शान्तिकुञ्ज में आयोजित होने वाले नौ दिवसीय सत्रों में भाग लेकर अपनी चेतना की "बैटरी चार्ज" करते रहने का आह्वान किया गया है, ताकि युग सृजन का कार्य बिना रुके चलता रहे।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: प्राण-चेतना को प्रखर बनाए रखने के लिए लेखक ने क्या करने का सुझाव दिया है? उत्तर: लेखक ने सुझाव दिया है कि प्रज्ञा-परिजनों को वर्ष में एक या दो बार शान्तिकुञ्ज की यात्रा करनी चाहिए।
2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में कितने दिनों के सत्र आयोजित होते हैं? उत्तर: हर महीने नौ-नौ दिन के तीन सत्र (१ से ९, ११ से १९, २१ से २९ तारीख) आयोजित होते हैं।
3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के सत्रों में आने की तुलना किससे की गई है? उत्तर: इसकी तुलना बैटरी को बार-बार चार्ज करने से की गई है।
4. प्रश्न: नेवला और साँप की लड़ाई का उदाहरण क्यों दिया गया है? उत्तर: यह समझाने के लिए कि जैसे नेवला लड़ाई में थकने पर जड़ी-बूटी खाकर नई शक्ति प्राप्त करता है, उसी प्रकार सृजन-शिल्पियों को भी शान्तिकुञ्ज आकर अपनी प्राण-ऊर्जा को पुनः जाग्रत करना चाहिए।
5. प्रश्न: सज्जनों और सत्प्रवृत्तियों का विस्तार किस बात का प्रधान लक्षण है? उत्तर: यह नवयुग के अवतरण का प्रधान लक्षण है।

6. प्रश्न: पुस्तक के अंत में सभी से क्या करने का आग्रह किया गया है? उत्तर: प्रत्येक व्यक्ति से "एक से अनेक" बनने का व्रत लेने और प्रज्ञावतार (मत्स्यावतार) के विस्तार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए पुरुषार्थ करने का आग्रह किया गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के सत्रों में केवल मिशन से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े लोगों को ही क्यों बुलाया गया है? उत्तर: क्योंकि ये सत्र उच्च स्तरीय प्रशिक्षण (कॉलेज स्तर की योग्यता) के लिए हैं। जो लोग मिशन के प्राथमिक सिद्धांतों से नहीं जुड़े हैं (आरम्भिक कक्षाएँ), वे इसका पूरा लाभ नहीं उठा पाएँगे और व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करेंगे। इसलिए पहले स्थानीय स्तर पर जुड़कर सक्रिय होने की अपेक्षा की गई है।

2. प्रश्न: लेखक ने युग सृजन के कार्यकर्ताओं की तुलना "समुद्र सेतु बाँधने वाले वानरों" और "गोवर्धन उठाने वाले ग्वाल-बालों" से क्यों की है? उत्तर: यह तुलना इसलिए की गई है ताकि कार्यकर्ता यह समझें कि भले ही उनकी व्यक्तिगत योग्यता, सम्पन्नता या सुविधा कम हो, लेकिन यदि वे संगठित होकर एक महान उद्देश्य के लिए प्रयास करेंगे, तो वे भी राम और कृष्ण के सहयोगियों की तरह असंभव लगने वाले कार्य को संभव बना सकते हैं। यह सामूहिक प्रयास और निःस्वार्थ सहयोग के महत्व को दर्शाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय का शीर्षक "प्राण-चेतना प्रखर बनाए रखें" पूरे मिशन के दर्शन को कैसे सारांशित करता है? उत्तर: यह शीर्षक मिशन के मूल दर्शन को सारांशित करता है। इसका अर्थ है कि युग परिवर्तन केवल बाहरी गतिविधियों या कार्यक्रमों से नहीं होगा, बल्कि इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी आंतरिक आध्यात्मिक ऊर्जा (प्राण-चेतना) को निरंतर जाग्रत और शक्तिशाली बनाए रखना होगा। जैसे अंगारे पर से राख हटाते रहना पड़ता है, वैसे ही नियमित साधना और प्रेरणा (जैसे शान्तिकुञ्ज के सत्र) से अपनी चेतना को प्रखर रखना अनिवार्य है, क्योंकि यही आंतरिक ऊर्जा सभी बाहरी सृजन कार्यों की संचालक शक्ति है।

2. प्रश्न: "अपने समय का प्रज्ञावतार ही प्राचीनकाल का मत्स्यावतार है।" इस अंतिम वाक्य का पूरी पुस्तक के संदर्भ में क्या निष्कर्ष है? उत्तर: यह वाक्य पूरी पुस्तक का सार और निष्कर्ष है। इसका अर्थ है कि प्राचीन काल में मत्स्यावतार का जो उद्देश्य था—श्रेष्ठता का असीम विस्तार करना—वही उद्देश्य आज के युग में 'प्रज्ञावतार' (ज्ञान और विवेक का अवतरण) के रूप में प्रकट हो रहा है। यह पुस्तक यह स्थापित करती है कि युग निर्माण मिशन और उसका विस्तार (जैसे 'अखण्ड ज्योति' का फैलना) उसी दिव्य चेतना का आधुनिक रूप है, जिसका लक्ष्य सज्जनता और श्रेष्ठता को तब तक फैलाते रहना है, जब तक वह समाज में व्याप्त हर नकारात्मकता पर विजय न पा ले।

पुस्तक में परिभाषित शब्द एवं उनकी परिभाषाएँ

- नरक - वह वातावरण जिसमें पिछड़े, प्रतिगामी और उद्दण्डों का बाहुल्य होता है।
- स्वर्ग - मात्र सज्जनों की, सत्प्रवृत्तियों की बहुलता उपलब्ध कर लेने की स्थिति।
- सतयुग - वह युग जिसमें जन समुदाय का बहुमत, श्रेष्ठता और शालीनता से भरा-पूरा था।
- कलियुग - वह युग जिसमें दुर्जनों की, दुष्प्रवृत्तियों की बहुलता पाई जाती है।
- चेतना क्षेत्र की ऊर्जा - भगवान्।
- चल प्रज्ञा मन्दिर - इसी को ज्ञानरथ के नाम से जाना जाता है।
- ज्ञानरथ - यह विशुद्ध चल-पुस्तकालय के रूप में चलाए जाते हैं।
- सज्जनों का संगठन - यही दैवी शक्ति के रूप में प्रकट होता है और लक्ष्य पर ब्रह्मास्त्र की तरह टूटता है।
- धर्म - यह (धर्म) क्षेत्र वस्तुतः दे सकने वाली उमंगों से भरे-पूरे शूरवीरों का है, यह भिखारियों का पेशा नहीं है।
- अपने समय का मत्स्यावतार - इसे युग परिवर्तन का सुनियोजन भी कह सकते हैं।
- नवयुग के अवतरण का प्रधान लक्षण - सज्जनों का, सत्प्रवृत्तियों का विस्तार।
- अपने समय का प्रज्ञावतार - यह प्राचीनकाल का मत्स्यावतार है।